शोध मंथन Vol. XVI No.4 Oct.- Dec. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.88

भारतीय समकालीन कला में संस्थापन कला की कलात्मक शैलियों का वर्णानात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 01.12.25
स्वीकृतः 15.12.25

88

डॉ. मनोज कुमार
ईमेल:*manojgbss0@gmail.com*

सारांश

पारम्परिक कलाएँ एवं उनकी अवधारणाएँ सौन्दर्यमूलक तत्वों पर आधारित होती थी। किन्तु आधुनिकता के नए बोध ने कला के अर्थों तथा उसकी अवधारणाओं में काफी परिवर्तन लाया है। परिणामतः आज कला एवं कला निर्मिति के माध्यम तथा उसके प्रस्तुतिकरण की भाषा में बहुआयामी परिवर्तन आया है। संस्थापन कला की विभिन्न प्रचलित शैलियों तथा प्रवृतियों के सन्दर्भ में समसामयिक एवं आधुनिकता प्रायः समानार्थी शब्द हैं। 20वीं शताब्दी के कला रूपों ने सभी पारम्परिक सीमाओं के क्षितिज को तोड़ दिया। दृश्य कला के बदलते मूल्यों के कारण समकालीन कला में माध्यमों, तकनीकों एवं सामाग्रियों की नई उपलब्धता ने इसे नए ढंग से गढ़ने को उत्सुक किया।

मुख्य शब्द

संस्थापन कला, समकालीन कला, सृजनात्मकता, प्रयोगशीलता, अभिव्यक्ति, सामाजिक चेतना।

भले ही इन बदलावों ने समकालीन कला के स्वरूपों को परिवर्तित कर दिया हो, किन्तु इसने कला के सीमाओं (क्षितिज) को पहले से कहीं ज्यादा विस्तार दिया है। दरअसल द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरी दुनिया में राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से उथल–पुथल का माहौल चल रहा था, औधोगिक प्रगति तथा तकनीकी अभिवृद्धि ने भी पारंपरिक धारणाओं तथा संस्कृति को प्रभावित किया। ऐसी स्थिति में इसका प्रभाव ललित कलाओं पर पडना भी स्वाभाविक ही था। अतएव साठ–सत्तर के दशक में दुनियाँ के एक बहुत बड़े हिस्से के चाक्षुश कला स्रष्ठाओं ने पारंपरिक कला माध्यमों से पृथक होकर, कला में कुछ अत्याधुनिक माध्यमों का प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप कला एवं दर्शक के मध्य की सीमारेखा धुंधली पड़ने लगी।

तत्कालीन परिदृश्य में समकालीन भारतीय कला में बहुविधिक माध्यमों का प्रचलन तेजी से चल रहा हैं, सभंवतः उन्हे स्थापित करने में एक लबीं समयावधि व अनके कलाकारों के परिश्रम लगे

है। जिसने कला को देखने, समझने व प्रस्तुत करने के मानकों में विशेष परिवर्तन लाया है। हालाकि आज कंप्यूटर, डिजिटल कैमरा व अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयागे कला में व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। कदाचित इसने कलात्मक चिंताओं के प्रस्तुतीकरण के भाषा को बदल दिया हैं, परंतु तकनीकी प्रगति के विस्तार ने चाक्षुश कलाओं की पराकोटि को तार–तार कर दिया है।

''भारतीय समकालीन कला के विविध प्रकारों और प्रारूपों तथा सम्पूर्ण भारत में इनके निरंतर बदलते रूपकारों का आकलन कर पाना निश्चय ही असंभव हैं एवं इनके मुक–मुखर रचाव, अनुरोध और अभिप्राय का युक्तियुक्त विश्लेषण तो और भी कठिन है। कई संस्थापन जैसे विडियों सरंथापन, इन्टरैक्टिव संस्थापन, मूर्तिशिल्प सस्थापन, ध्वनि सस्थापन आदि एक ही स्रष्ठा की निर्मिति होने के बावजूद अपने अभिगम और अवबोध में अलग होता है। यदि किसी कलाकार को ऐसा आभास होता है कि वह संतोषप्रद ढंग से ऐसा कुछ रच पाया है तो उसे सार्थकता का अहसास होता है''[1] भारतीय समकालीन कला एवं कलाकार विविध नवीन कला माध्यमों जैसे– विडियों प्रोजेक्सन, वेब आधारित तकनीक, सेंसर तकनीक, आदि अन्य कई मामलों में पाश्चात्य देशों से प्रभावित रहा है। समकालीन भारतीय कला परिदृश्य में ऐसे अनके कलाकार है जिन्हे हम आज उनके कला में रचना सामग्रियों, नये प्रयोगों, नई तकनीकों और नई अभिव्यक्तियों के लिए जानते है।

वीडियो संस्थापन : वीडियो संस्थापन समकालीन कला में रचनात्मक अभिव्यक्ति को सम्प्रेषित करने का एक नवीन माध्यम है। जो गतिशील छवियों की श्रृंखला पर आधारित होती है। इस अनूठी विधा में अपनी संवेदना व विचारों को सम्प्रेशित व अभिव्यंजित करने के लिए श्रव्य व दृश्य चलचित्र जैसे गतिशील माध्यमों का सहारा लिया जाता है। अर्थात् दूसरे शब्दों में कहा जाए तो समकालीन कला की इस विधा में छवि, ध्वनि तथा गति प्रमुख के रूप में कार्य करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कला का कोई भी स्वरूप क्यों न हो, चाहे कोई कलाकार अपनी रचनात्मकता के लिए किसी भी माध्यम का प्रयोग क्यों न किया हो, उन सभी रूपों में एक मूलभूत विचार और संवेदना एक समान तत्व होती है। चित्रकला और वीडियो संस्थापन ये दो अलग–अलग कलाएँ हैं। जहाँ एक में रंग व कैनवास है, तो दूसरे में ध्वनि, छवि, गति और तकनीक। लेकिन यह दिलचस्प है कि इन दोनों विधाओं में एक चीज है जो एक समान है, और वह है संवेदनशीलता। कदाचित इन दोनों के आकारों में भिन्नताएँ होती हैं, किन्तु अभिव्यक्ति के स्तर पर यह दोनों एक समान ही है।

वीडियो इन्स्टॉलेशन वास्तव में वीडियो आर्ट का ही परिष्कृत रूप है, जो 1960 से 70 के दशक में अस्तित्व में आया था। किन्तु वर्तमान में समकालीन कला जगत में इसे अपनी कला को सम्प्रेषित करने के लिए बहुल्यता से उपयोग किया जा रहा है। ''सर्वप्रथम सन् 1958 में वोल्फ वोसेल (Wolf Vostell) ऐसे पहले कलाकार थे, जिन्होंने अपने इन्स्टॉलेशन "Black Room Cycie" में एक टी0वी0 सेट रखा था। 1963 में वोल्फ वोसेल ने एक अन्य इन्स्टॉलेशन "6 TV De-collage" सिमोलिन गैलरी न्यूयार्क में किया। साथ में 1963 में एक वीडियो "Sun in your head" किया''[2] अर्थात् 1960 के दशक के उत्तरार्ध में गतिमय छवियों का प्रयोग वीडियो के रूप में कला में एक नए दृष्टिकोण को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से किया जाने लगा था। इस कला निर्मिति में उपकरणों का उपयोग अपनी कलात्मक सम्प्रेषण (जैसे– टी0वी0 सेट, मॉनीटर, प्रोजेक्टर आदि) के लिए किया

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.88

जाने लगा। इन्हीं उपकरणों की सहायता से गतिशील छवियों या पूर्व–रिकार्डेड दृश्य व श्रव्य (Video & Audio) को कला दीर्घाओं, संग्रहालयों या किसी अन्य स्थानों पर उसे प्रसारित किया जाता है। नेम जून पाइक जो कोरियाई मूल के एक अमरिकी कलाकार थे। इन्हें वीडियो संस्थापन के प्रवर्तक के रूप में भी जाना जाता है। इन्होंने पहली बार किसी वीडियो का प्रयोग अपनी कला को उद्घाटित करने के लिए एक माध्यम के रूप में किया था। उन्होंने अपनी कला को सम्प्रेषित करने के लिए अधिकतर टेलीविजन, मॉनीटर, प्रोजेक्टर आदि को व्यवस्थित कर कला दीर्घाओं के भित्तियों पर आभाषिये वातावरण प्रस्तुत किया। सन् 1963 में इन्होंने ''गेलरी पनार्स'' Esa Wuppertal (जर्मनी) में टी0वी0 का प्रयोग किया। 1965 में चलचित्र कला को न्यूयार्क के ''पोप पाल VI'' के समारोह को Sony Portapak से रिकार्ड करके प्रसारित किया गया।

सिनेमा और वीडियो संस्थापन यह दोनों ही व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक रूप में एक–दूसरे के ही समान है, किन्तु विषय, प्रस्तुति तथा विचारों के स्तर पर यह दोनों एक–दूसरे से एकदम भिन्न हैं। इन दोनों रूपों के माध्यमों में कैमरा, फिल्म, पात्र, ध्वनि एवं छवियों का प्रयोग लगभग एक जैसा ही किया जाता है, परन्तु सिनेमा में अभिनेता एवं डॉयलाग के साथ मुख्य उद्देश्य दर्शक का मनोरंजन होता है। जबकि वीडियो संस्थापन का मुख्य उद्देश्य कलाकार की अभिव्यक्ति, विचार एवं संदेश को दर्शक तथा समाज तक सम्प्रेशित करना होता है। जो प्रेक्षकों के भागीदारी से अधिक सफल होता है। प्रसिद्ध भारतीय कला समीक्षक विनोद भारद्वाज ने सिनेमा और वीडियो आर्ट के मध्य अन्तर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''वीडियो आर्ट सिनेमा नहीं है उसमें सिनेमाई भाषा का इस्तेमाल जरूर किया जाता है। इसमें कैमरा का लगभग ब्रश की तरह इस्तेमाल होता है पर वीडियो आर्ट को सिनेमा नहीं कहा जा सकता।''[3]

पिछले कुछ दशकों के इतिहास का परिशीलन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस विधा की अपनी कुछ सीमाएँ हैं। इसके बावजूद समय–समय पर कलाकारों ने इस विधा के साथ कुछ रचनात्मक परिवर्तन कर अपनी कला को प्रस्तुत करने का इसे माध्यम बनाया। भारत के प्रसिद्ध कलाकार मकबूल फिदा हुसैन ने ''साठ के दशक के अन्त में अपनी चर्चित फिल्म ''थ्रू द आइज ऑफ ए पेंटर'' बनाया, जिसे बर्लिन के प्रतिष्ठित फिल्म महोत्सव में पुरस्कार मिला था।''[4] कला क्षेत्र में यह फिल्म निर्माण एक अच्छी पहल थी। हुसैन ने अपनी दूसरी फिल्म ''मीनाक्षी : ए टेल ऑफ थ्री सीटीज'' में जैसलमेर के लैण्डस्केप में कुछ संस्थापन भी बनाया है। साथ ही ''गजगामिनी'' फिल्म जो उनके और माधुरी दीक्षित के प्रति प्रेम पर आधारित है। इन सभी फिल्मों में प्रेम, संवेदना एवं अभिव्यक्ति के सार को देखा जा सकता है। ''एम0एफ0 हुसैन ने 1990 में नई दिल्ली के श्री घराणी गैलरी में ''थिएटर ऑफ दि एब्सर्ड'' शीर्षक से एक नवप्रवर्तनकारी स्थापना प्रस्तुत किया था जो हिंसा तथा उसके बाद के स्थितियों की अवधारणा पर आधारित थी।''[4] यह संस्थापन दिल्ली के कला प्रेमियों में हलचल मचा दिया था।

अभिनय संस्थापन : शुरुआत से अभिनय शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से मंचीय कला या नाटकों के लिए होता रहा है। लेकिन इस आधुनिक काल में इस शब्द को व्यापक अर्थों में प्रयुक्त किया जाने लगा है। दरअसल दृश्य–कला के क्षेत्र में इस शब्द का प्रयोग 1970 के दशक से अभिनय

प्रदर्शन कला के रूप में किया जा रहा है। समकालीन कला जगत में अभिनय को संस्थापन कला के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है और यह बहुत ही दिलचस्प है कि इस प्रकार के प्रयोग से इस कला रूप को अत्यधिक विस्तार भी मिल रहा है। परिणामतः यह एक सशक्त कलाभिव्यक्ति के रूप में मुखर हुई। कला की इस नवीन शैली में मुख्य रूप से कलाकार के द्वारा किसी विशेष विचार व विषय को अभिनय के साथ कुछ अन्य वस्तुओं को संयोजित कर, संग्रहालय, कलादीर्घा, सार्वजनिक स्थान या किसी अन्य स्थानों पर प्रस्तुत किया जाता है। इस विधा में समय, स्थान, कलाकार एवं अन्य वस्तुएँ एक बुनियादी तत्व के रूप में कार्य करती है। वास्तव में देखा जाए तो अभिनय संस्थापन व्यवहार में प्रदर्षन कला एवं नाटक के बेहद निकट होते हुए भी (साम्य रखते हुए भी) उससे काफी भिन्न होती है। इस शैली में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि किस समय एवं स्थान पर इसको प्रस्तुत किया जाए, जिससे यह दर्शक व आम जन को अधिक प्रभावित करेगा। और वह अपनी अभिव्यक्ति में सफल हो सके।

आज समकालीन कला जगत में बहुत से भारतीय कलाकार जैसे– नलिनी मलानी, सुबोध गुप्ता, रत्नावली कांत, शिल्पा गुप्ता और कई अन्य कलाकार हैं जो अपनी इन्स्टॉलेशन में अभिनय का प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के रूप में सन् 2003 में सुबोध गुप्ता द्वारा सृजित अभिनय आधारित संस्थापन कृति ''काउब्बाय'' को देखा जा सकता है। ''इस कृति में उन्होंने अपने नग्न शरीर पर गोबर मल कर बेहद सीधे और सशक्त ढंग से अपना एक स्मृति सक्षम और मिथकीय देशकाल रचा है। वह इन खेतिहर लगती लीलाओं से रस हासिल करते हैं। एक पुराने और बंद पड़े कारखाने की जमीन पर एक गाय पर कीचड़ से लिपटे बैठे ये गोपाल रूपी सुबोध गुप्ता ''काउब्बाय' कृति में मोदीनगर (जहाँ उन्होंने अपना पहला प्रदर्शन किया) से लेकर मैनहॅटन तक (जहाँ उनकी अगली प्रदर्शनी लगने वाली की) उसे हांकते हुए लेकर गए।''[5] इस प्रकार गुप्ता की इस कृति में अभिनय, संस्थापन एवं नाटकीय तत्वों की गहरी समझ दिखाई देती है।

ध्वनि संस्थापन : "Sound is materially invisible but very visceral and emotive. It can define a space at the same time as it triggers a memory." – Susan Philipsz ध्वनि संस्थापन, संस्थापन कला का ही एक कला रूप है, जो ध्वनि, समय एवं इंटरमीडिया पर आधारित होता है। यह एक साइट–विशिष्ट कला शैली होती है। यह समकालीन कला शैली का एक मिश्रित कला रूप है, जो दृश्य कला और प्रयोगात्मक संगीत व ध्वनि को एक साथ संदर्भित करता है। इस विधा में निर्मित कृतियों का दर्शक के मन एवं उसकी मानसिकता पर गहरा एवं प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। ''अमेरिकी संगीतकार और साउंडस्केप इकोलॉजिस्ट बर्नी क्रूस ने एक बार कहा था–''जबकि एक तस्वीर एक हजार शब्दों के लायक हो सकती है, एक साउण्डस्केप एक हजार चित्रों के लायक है।''[6]

शिल्पा गुप्ता का एक अन्य संस्थापन जो नगर जीवन पर आधारित था। इस विषय को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से वह ''एक अपार्टमेंट के सिक्यूरिटी गार्ड के पास जाकर उनके परिवेश में स्थित ध्वनियों को रिकार्ड किया। आप उसमें ध्वनि की मधुरता नहीं पाएँगे। लेकिन आप विजुअल्स देखकर व विशिष्ट ध्वनियों के जरिए अपनी स्मृति को जागृत करते हैं। इस प्रक्रिया में दर्शक को जिज्ञासा और समाधान की संतुष्टि का भाव आता है। वही कलाकार को रचनात्मक सफलता मिल जाती है।''[7]

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.88

मूर्तिशिल्प संस्थापन : समकालीन कला की अत्यधिक लोकप्रिय कलारूप संस्थापन अपने नित नवीन कलेवरों में हमारे समक्ष उपस्थित दिखाई देता है। प्रतिष्ठापन कला, चित्र, मूर्तियाँ या अन्य कला शैलियों की भाँति ही अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखता है, जिसमें अन्य कलाभिव्यक्तियों के समान दर्शक एवं कला का पृथक अस्तित्व न होकर एक होता है। मूर्तिकला एवं वास्तुकला से साम्य रखने वाला यह कलारूप अभिव्यक्ति की एक नई भाषा प्रस्तुत करता है। वर्तमान में संस्थापन कला भिन्न–भिन्न रूपों में विस्तार पा रहा है, जो सौन्दर्य एवं सृजन का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। ठीक इसी सरीखे से मूर्तिशिल्प संस्थापन भी प्रतिष्ठापन कला का एक स्वतंत्र स्वरूप है। वस्तुतः जिस संस्थापन कृतियों का बाह्य रूप मूर्तिशिल्प के बाह्य रूप का आभास देता हो उसे मूर्तिशिल्प संस्थापन या मूर्तिशिल्प आधारित संस्थापन कहा जाता है। अधिष्ठापन कला के इस रचनात्मक स्वरूप को समझने के लिए सर्वप्रथम मूर्ति–शिल्प और मूर्तिशिल्प संस्थापन के मध्य के मूलभूत अन्तरों को समझना सबसे आवश्यक है। मूर्तिशिल्प, कला का वह प्राचीनतम कला रूप है जोत्रि–आयामी होता है और यह सौन्दर्यशास्त्र से अधिक संबंधित होता है। जो प्रेक्षक को निरूपण के लिए नकारात्मक एवं सकारात्मक स्थान प्रदान करता है। जबकि प्रतिष्ठापन कला आधुनिक कला प्रवृत्ति का त्रि–आयामी रूप होते हुए भी मूर्तिशिल्प के सिद्धान्तों के विपरीत विभिन्न वस्तुओं एवं तत्वों का संयोजन होता है।

स्थान–विशिष्ट संस्थापन : सभी कलाओं एवं माध्यमों का अपना एक मौलिक गुण व प्रवृत्ति होता है, जिसके आधार पर उसका वर्गीकरण या विश्लेषण किया जाता है और वह उन्हीं मौलिक विशेषताओं के साथ, दर्शकों एवं समाज के मध्य अपनी पहचान बनाती है। ठीक इसी सरीखे से स्थान–विशिष्ट इन्स्टॉलेशन आर्ट का अभिप्राय भी एक विशेष प्रकार की कार्य प्रणाली या सृजनशीलता से है। जिसमें स्थान की विशिष्टता एक मुख्य घटक के रूप में कार्य करती है। इस विधा के अन्तर्गत अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए किसी विषेश स्थान का चयन किया जाता है। जो उस भावाभिव्यक्ति व विचार को उद्घटित करने में सक्षम हों, जबकि उस स्थान के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान के व्यवहार से उस भाव एवं प्रभाव को उत्पन्न नहीं किया जा सकता। यह स्थान मानव निर्मित या प्राकृतिक भी हो सकता है। वर्तमान में इस प्रकार के संस्थापनों के लिए संग्रहालय एवं कला दीर्घाएँ भी इसके अनुकूल स्थान उपलब्ध कराते हैं।

दरअसल सरल भाषा में कहा जाए तो उस स्थान से उस कृति को हटाते ही वह सृजित संस्थान विसर्जित या नष्ट कर दिया जाता है। भारतीय संस्थापन कला की प्रतिष्ठित कलाकार नलिनी मलानी द्वारा 1992 में निर्मित ''इच्छाओं का शहर'' एक सुंदर उदाहरण है, जिसे बम्बई की गैलरी शिमोल्ड की दीवारों पर बनाया गया था और उद्देश्य (प्रदर्शनी) पूर्ण होने के उपरान्त इसे नष्ट कर दिया गया।

साइट–विशिष्ट कला के सन्दर्भ में माना जाता है कि इस 'शब्द को कैलिफोनियाई कलाकार ''राबर्ट इरविन'' द्वारा प्रचारित और परिष्कृत किया गया था। लेकिन यह वास्तव में पहली बार 1970 के दशक के मध्य में युवा मूर्तिकारों जैसे– पेट्रीसिया जोहानसन, डेनिस ओपेनहेन और एथेना टैचा द्वारा उपयोग किया गया था। जिन्होंने बड़े शहरी स्थलों के लिए सार्वजनिक आयोगों को क्रियान्वित करना शुरू किया।''[8]

अगर भारतीय स्थान–विशिष्ट संस्थापन के सन्दर्भ में कहा जाए तो एम0एफ0 हुसैन की कृति ''श्वेताम्बरी'' को भारतीय कला में पहला स्थान विशिष्ट प्रतिष्ठापन के रूप में देखा जा सकता है। यह संस्थापन सन् ''1991 में मुम्बई के प्रतिष्ठित जहाँगीर आर्ट गैलरी में लगाया गया था, जिसमें एक बहुत बड़ा सैकड़ों मीटर लंबा कपड़ा गैलरी के स्पेस के केन्द्र में था। पूरी गैलरी में न जाने कितने कागज, कतरनें बिखरी हुई थी। प्रेक्षक उन कागजों को रौंदते हुए निकल सकते थे।''[9]

परस्पर संवादात्मक संस्थापन (इन्टरैक्टिव संस्थापन) इंटरैक्टिव इंस्टालेशन आर्ट आधुनिक कला शैली की नई कला प्रवृत्ति है, जो पारम्परिक कला अवधारणाओं से एकदम विपरीत है। वास्तव में देखा जाए तो पारम्परिक कलाओं में परस्पर संवादात्मक अवधारणा केवल मानसिक स्तर पर ही सीमित रहता था, किन्तु इस उत्तर आधुनिकतावादी कला शैली में यह मानसिक, बौद्धिक तथा शारीरिक इन तीनों स्तरों पर दर्शकों को प्रभावित करती है तथा यह कला रूप दर्शकों को रचनात्मक प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर भी प्रदान करती है। सरल भाषा में कहा जाए तो परस्पर संवादात्मक संस्थापन (इन्टरैक्टिव संस्थापन) संबंधपरक सौन्दर्यशास्त्र से जुड़ी होती है। ''इंटरैक्टिव संस्थापन अमूमन कम्प्यूटर आधारित होते हैं, जो अक्सर संवेदकों पर निर्भर करते हैं।''[10] यह गति तापमान, सामीप्य तथा वायुमण्डलीय अवधारणाओं जैसी चीजों की प्रतिक्रियाओं को प्रकट करने के लिए तैयार किया जाता है।

पथ संस्थापन : पथ संस्थापन कला पथ कला की ही एक आधुनिक कला शैली है, जिसमें कलाकार अपनी रचनात्मकता के लिए सड़कों या सार्वजनिक स्थानों का चुनाव करता है। स्ट्रीट इंस्टालेशन के पीछे अंतर्निहित प्रेरणा और विश्वास तथाकथित रूप से कलाओं को संग्रहालयों एवं कलादीर्घाओं से बाहर निकालकर सड़कों पर दर्शकों के समक्ष उपस्थित कर दिया। परिणामतः यह कभी–कभी परस्पर संवादात्मक रूप से भी स्वयं को प्रस्तुत करने लगा।[11]

संस्थापन कला के प्रमुख तत्व : किसी प्रकार के कला सृजन के पीछे का मुख्य आधार कलाकार का वैचारिक अवधारणा एवं उसकी अभिव्यक्ति होती हैं। विशेषकर जब संस्थापन कला के सन्दर्भ मे बात किया जाए तो एक अधिष्ठापन कलाकृति का आकार और उसमें प्रयुक्त सामग्री का चयन भी उसमे व्यक्त विचारों पर निर्भर करता है। सामान्यतः कला की कोई भी कार्य प्रणाली या कलारूप क्यों न रहा हो, वह अपने सौंदर्यात्मक गुणों को उद्घाटित करने के लिए सदैव उसके मूलभूत तत्वों पर निर्भर रहता हैं। अतः जिस प्रकार रेखा, रूप, रंग, आकार, अंतराल, पोत, आदि कला के मूलभूत तत्व होता है। हम सभी इस विषय से भलि–भाति परिचित हैं कि समकालीन कला मे संस्थापन कला के कई रूप क्रियामान है और उन सभी के अपने मौलिक तत्व भी होते है, जो कलाकारों के लिए एक चुनौती खडा करता हैं।

पारस्परिकता : इस आधुनिक युग में नवीन कलाविचारों और उद्भावनाओं में आये परिवर्तनों ने इंस्टालेशन आर्ट को अत्यन्त विस्तृत रूप प्रदान किया। कला की इस नई पद्धति में पारस्परिकता का बोध अन्य कलारूपों की अपेक्षाकृत कहीं अधिक प्रबल है।[11]

भारतीय समकालीन कला में संस्थापन कला ने पारंपरिक कलात्मक सीमाओं को तोड़ते हुए नई अभिव्यक्ति की शैली विकसित की है। इसमें स्थान, वस्तु, ध्वनि, प्रकाश और दर्शक की सहभागिता

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.88

को कलाकृति का अभिन्न अंग बनाया गया है। कलाकार अब केवल चित्रण या मूर्तिकला तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर गहन संवाद स्थापित कर रहे हैं। इस कला के माध्यम से आधुनिक भारतीय कलाकार अपनी सृजनात्मक स्वतंत्रता, प्रयोगशीलता और समकालीन चेतना को अभिव्यक्त कर रहे हैं। इस प्रकार, संस्थापन कला भारतीय समकालीन कला का एक नवोन्मेशी और प्रभावशाली आयाम बन चुकी है।

संदर्भ

1. महावर, कृष्ण (2015) ''न्यू आर्ट ट्रेन्ड्स'', जयपुर, पृ० सं०–**58**
2. भारद्वाज, विनोद (2015) ''वीडियो आर्ट बनाम कैनवास'', बृहद आधुनिक कला कोश, पृ० सं०–**251**
3. भारद्वाज, विनोद (2015) ''वीडियो आर्ट बनाम कैनवास'', कला दीर्घा, अप्रैल, वर्ष 5, अंक–10, पृ० सं०–**7**
4. मागो, प्राणनाथ (2006), ''भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य'', अनुवाद– सौमित्र मोहन, पृ० सं०–**126**
5. भास्कर, भुवनेश्वर (अक्टूबर 2014) ''जहाँ आप सीमा तोड़ते हैं, वहाँ कला बन जाती है'', कला दीर्घा, Vol. 13, No. 29, पृ० सं०–**29**
6. भारद्वाज, विनोद (2005) ''वीडियो आर्ट बनाम कैनवास'' कला दीर्घा, अप्रैल, वर्ष– 5, अंक–10, पृ० सं०–**7**
7. कालिदास एस0 2010, 'सुबोध गुप्ता की कला मे ं कविता और राजनीति कला', भारती खण्ड दो, पृ० सं०–**451**
8. Johan, Badar, 2006, 'Communication through Installation and Public Art', Kala Dirgha, Vol. 6, No. 12, Pg. **88**.
9. tate.org.uk/art/art-terms/s/sound-art. 05.05.2022
10. कुमार, विनय (2010), आधुनिक कला में संस्थापन का मतलब, कला भारती, खण्ड दो, पृ० सं०–**553**
11. https:.m.wikipedia.org/wiki/site-specific-art